SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

SESSION – 2021-2023

COURSE NAME – B.Ed. 1st year

SUBJECT – Language across the Curriculum C-4

TOPIC NAME – UNIT-1 : भाषा का अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, महत्व

DATE – 21-01-21

Class → B.Ed 1st year

Language across the Curriculum

सम्पूर्ण पाठ्यचर्या में भाषा

C - 4

[भाषा शब्द संस्कृत के भाष् धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना अर्थात भाषा वह है जिसे बोला जाए]

Topic – "भाषा का अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, महत्व, कार्य"

Unit 1 - हिन्दी भाषा का अर्थ

[NOTE- यहाँ पर शैशवावस्था से किशोरावस्था तक बालक के भाषायी विकास को विस्तार पूर्वक]

- सम्पूर्ण जीवमण्डल में केवल मनुष्य को ही भाषा का अमूल्य वरदान ईश्वर से मिला है।
- मनुष्य, मनुष्य है और सभी जीवधारियों में सर्वोत्तम स्थान है।
- भाषा एक मानवीय कलाकृति है।

डार्विन के मतानुसार, "भाषा ईश्वरीय वरदान नहीं है अपितु ध्वनियों, शब्दों, और बोली से विकसित एवं परिष्कृत होकर आज इस अवस्था तक पहुँची है।"

- भाषा के विकास में मानव का सीधा सम्बन्ध है।
- भाषा भावों एवं विचारों की जननी तथा अभिव्यक्ति का साधन एवं माध्यम है।
- भाषा के कारण ही मनुष्य इतना उन्नत प्राणी बन सका है।

Note "आज भी मनुष्य की अनुभूतियों (अर्थात संवेदनाओं को) को शाब्दिक भाषा से अभिव्यक्त करना सम्भव नहीं है। उसकी अभिव्यक्ति के लिए मूक (हाव-भाव की भाषा) भाषा यानि अशाब्दिक भाषा का ही प्रयोग किया जाता है। यह अक्सर व्यक्तियों को कहते सुना है इसकी अभिव्यक्ति के लिए हमारे पास उपयुक्त शब्द नहीं है। अधिक दुःखी व्यक्ति अपनी वेदनाओं की अभिव्यक्ति अश्रुधारा (रोकर) से ही कर पाता है।"

⇨ इस प्रकार भाषा के दो रूप हैं — / भाषा का विश्लेषण

I.

शाब्दिक भाषा

- मौखिक वाचन, लेखन
- ध्वनि विज्ञान (वाचन)
- लेखन विज्ञान (लेखन)
- भाषायी कौशल (पढ़ना, लिखना, बोलना, सुनना)
- व्याकरणीय रूप
- शिक्षण एवं परिक्षण की औपचारिक रूप
- ज्ञानात्मक, क्रियाशील

II.

अशाब्दिक भाषा

1 प्रभावशाली शिक्षक कक्षा का नियन्त्रण तथा छात्रों को अभिप्रेरण अपने हाव-भाव से ही देता है।

1 अनुभूतियों (संवेदना) की अभिव्यक्ति अशाब्दिक अन्तःप्रक्रिया से ही होती है।

- शान्त भाषा, शारीरिक भाषा, हाव-भाव भाषा।
- मुख्य मुद्राएँ।
- शारीरिक अंगो की क्रियाशीलता
- अनौपचारिक कोई व्याकरणीय भाषा
- भावनात्मक पक्ष

- मूक भाषा शरीर – भाषा है। यानि हाव-भाव की भाषा है

Note "शिक्षा के क्षेत्र में शोध अध्ययनों का निष्कर्ष यह है कि :—
शिक्षण की कक्षागत अन्तःप्रक्रिया में शाब्दिक तथा अशाब्दिक दो प्रकार की अन्तःप्रक्रिया में समान महत्व है।"

- भाषा कि उत्पत्ति का विषय 'भाषा – विज्ञान' है का क्षेत्र है।
- भाषा वास्तव में अभिव्यक्ति की, संकेतो की प्रक्रिया है।
- ध्वनि के लिए विभिन्न भाषाओं में अपनी-2 वर्णमाला विकसित की है।
- वास्तव में वर्णमाला एक भाषा के संकेतो का स्वरूप है।
- अपने भावों एवं विचारों को लेखन से शुद्ध एवं परिष्कृत भाषा में प्रस्तुत करता है।

Note " शारीरिक दोष होने पर बालक वर्ण या शब्द से शुद्ध ध्वनि उत्पन्न नही कर पाता है। इसका यह अर्थ लगाते हैं कि बालक में भाषा-शक्ति का अभाव है जबकि चिन्तन शक्ति व विचार शक्ति का अभाव नहीं है।"
(यानि भाषा-शक्ति का अभाव है न कि चिन्तन व विचार शक्ति)

Q भाषा के विश्लेषण में शाब्दिक भाषा में ज्ञानात्मक, क्रियात्मक और अशाब्दिक भाषा में भावनात्मक पक्ष से क्या समझते है?

- किसी भी भाषा का विश्लेषण दो घटको में किया जाता है।

I. शाब्दिक पक्ष
II. अशाब्दिक पक्ष

- भाषा के दोनो पक्ष साथ-2 क्रियाशील रहते है।
- शाब्दिक भाषा की क्रियाशीलता अशाब्दिक भाषा पर निर्भर रहती है।
- शिक्षण अधिगम का भावनात्मक पक्ष अशाब्दिक भाषा से विकसित होता है।
- भाषा के विश्लेषण से इसके स्वरूप का बोध होता है।
- भाषा के घटको में व्याकरणीय पक्ष अधिक महत्वपूर्ण होता है।
- प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है।
- व्याकरण भाषा विज्ञान की आत्मा है।

भाषा की प्रकृति / विशेषताएँ

Note भाषा की परिभाषाओं में उसकी विशेषताओं का ही उल्लेख किया जाता है जिससे भाषा की प्रकृति का बोध होता है।
इसलिए उनकी विशेषताएँ निम्न हैं :—

(1) भाषा मानव मण्डल का ध्वनिमय स्वरूप है। जिससे भावों, विचारों तथा संवेगो की अभिव्यक्ति की जाती है।

(2) भाषा अभिव्यक्ति की दृष्टि से उच्चारण की सीमित ध्वनियों का संगठन है।

(3) ध्वनिमय शब्दों, संकेतो तथा चिह्नों द्वारा एवं विचारों की अभिव्यक्ति ही भाषा है।

(4) भाषा मौखिक तथा लिखित प्रतिको, शब्दों, संकेतो व चिह्नो की व्यवस्था है।

(5) भाषा एक माध्यम है जिसके द्वारा मानव - समाज एवं संस्कृति के विचारों एवं कार्यो का संप्रेषण किया जाता है।

(6) मानव मण्डल को भाषा (वाणी) का वरदान प्रकृति से मिला है जिसके कारण जीवन - मण्डल में सर्वोच्च स्थान पाया है।

(7) भाषा के माध्यम से मानव अपने ज्ञान को संचित करता है, प्रसार करता है तथा अभिवृद्धि भी करता है।

(8) भाषा मानव की कला कृति है, जिसके प्रमुख कौशल बोलना, लिखना, पढ़ना तथा सुनना है।

भाषा के सामान्य विशेषताएँ

(1) भाषा पैतृक सम्पत्ति नही है। (2) भाषा परम्परागत है, व्यक्ति उसका अर्जन कर सकता है, उसे उत्पन्न नहीं कर सकता।
(3) भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर जाती है। (4) भाषा (आद्यन्त) समाजिक वस्तु है।
(5) भाषा अर्जित सम्पत्ति है। (6) भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है।
(7) भाषा कठिनता से सरलता की ओर अग्रसर होती है।
(8) भाषा चिर परिवर्तनशील है।
(9) भाषा स्थूलता से सूक्ष्मता और पीढ़ता की ओर जाती है।